पाठ–10
मेरा जीवन

सुभद्रा कुमारी चौहान

कवयित्री परिचय

जन्म– 1904

मृत्यु– 1948

सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय चेतना की सजग कवयित्री रही हैं, अनेक बार जेल यातनाएँ सहने के पश्चात् अपनी अनुभूतियों को कहानी में भी व्यक्त किया। सुभद्रा जी विवाहोपरान्त भी आजीवन राष्ट्र के प्रति समर्पित रहीं। गाँधी जी की विचार धारा से प्रभावित नवोढ़ा सुभद्रा जी के अपने सारे गहने और विदेशी वस्त्रों का त्याग कर खद्दर की धोती अपना ली।

उनके पति लक्ष्मण सिंह चौहान भी स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय थे। सुभद्रा जी ने काव्य रचना के माध्यम से जनता को स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने को प्रोत्साहित किया। फलतः उन्हें गिरफ्तार भी किया गया, किन्तु उनकी सक्रियता बनी रही। सुभद्रा जी की रचनाओं में प्रेम, आनन्द, उल्लास, वीरत्व, देश भक्ति अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचे मिलते हैं। 28 अप्रैल, 2006 में उनकी राष्ट्र प्रेम की भावना के सम्मान में भारतीय तट रक्षक सेना ने अपने बेड़े के नवीन जहाज का नाम 'सुभद्रा कुमारी चौहान' रखा।

कृतियाँ

बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे–साधे चित्र (कहानी), मुकुल त्रिधारा (कविता संग्रह), झाँसी की रानी, मेरा जीवन, जलियाँ वाला बाग में बसन्त (प्रसिद्ध कविताएँ)

पाठ परिचय

'मेरा जीवन' शीर्षक कविता में कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने आशावादी खुशहाल जीवन को जीने का आह्वान किया है। कवयित्री ने बताया है कि व्यक्ति जीवन में उत्साह, उमंग, आशा, विश्वास और प्रेम का अवलम्बन कर कितने ही कष्टों का सामना करके सुखद जीवन का अनुभव कर सकता है। आधुनिक सन्दर्भों में जीवन की छोटी–छोटी समस्याओं से हताश और निराश जन को सकारात्मक सोच के साथ आनन्दमय जीवन निर्वाह के सूत्र इस कविता के माध्यम से प्राप्त होते हैं।

मेरा जीवन

मैंने हँसना सीखा है,
मैं नहीं जानती रोना;
बरसा करता पल–पल पर
मेरे जीवन में सोना ।
मैं अब तक जान ना पाई
कैसी होती है पीड़ा;
हँस–हँस जीवन में
कैसे करती है क्रीड़ा ।
जग है असार सुनती हूँ,
मुझको सुख–सार दिखाता;
मेरी आँखों के आगे
सुख का सागर लहराता ।
उत्साह, उमंग निरन्तर
रहते मेरे जीवन में,
उल्लास विजय का हँसता
मेरे मतवाले मन में ।
आशा आलोकित करती
मेरे जीवन को प्रतिक्षण
हैं स्वर्ण–सूत्र से वलयित
मेरी असफलता के घन ।
सुख–भरे सुनहले बादल
रहते है मुझको घेरे;
विश्वास, प्रेम, साहस हैं
जीवन के साथी मेरे।

शब्दार्थ

बरसा– बरसना
सोना– स्वर्ण, आनन्द
क्रीड़ा– खेल
उमंग– मौज, आह्लाद
उत्साह – हर्ष के साथ कार्य की तत्परता
पीड़ा – दुःख
असार– व्यर्थ, महत्त्वहीन

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) "बरसा करता पल–पल पर मेरे जीवन में सोना"। कवयित्री का "सोना" से अभिप्राय है–

(क) स्वर्ण (ख) कंचन

(ग) आनन्द (घ) आराम

2) ''मैं अब तक जान ना पाई'' कवयित्री क्या न जान पायी ?

(क) खेलना (ख) घूमना

(ग) गाना (घ) पीड़ा

अतिलघूत्रात्मक प्रश्न

(3) 'सुख का सागर' कब लहराता है?

(4) कवयित्री ने असफलता के बादलों को किससे घेर कर रखा है?

(5) कवयित्री ने अपना जीवन साथी किसे बना रखा है?

लघूत्रात्मक प्रश्न

(6) 'आशा आलोकित करती मेरे जीवन को प्रतिक्षण' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(7) 'मुझको सुख–सार दिखाता' सुभद्रा जी को यह अनुभूति कब होती है ? समझाइये।

(8) असफलता के घन जीवन से कब दूर किये जा सकते हैं ?

निबन्धात्मक प्रश्न

(9) 'मेरा जीवन' कविता का भावार्थ लिखिए।

(10) 'मेरा जीवन' कविता का आधुनिक समय में किस तरह उपयोग किया जा सकता है ? समझाइए।

(11) सुभद्रा कुमारी चौहान की किसी अन्य प्रमुख कविता का संकलन कर लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. ग
2. घ